काबुल में प्रीतिभोज के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

दिनांक 28 अगस्त, 2005
काबुल

आपने जो हमारा हार्दिक स्वागत किया है उसके लिए मैं न केवल अपनी और अपने शिष्टमण्डल की ओर से बल्कि भारत के लोगों की ओर से भी आपको धन्यवाद देता हूं। जिस असाधारण गर्मजोशी से हमारी मेहमाननवाज़ी और आदर-सत्कार हुआ है, वह दोनों देशों के लागों के बीच ऐतिहासिक तथा मैत्रीपूर्ण संबंधों को प्रतिबिंबित करता है। व्यक्तिगत रूप से यह मेरे लिए बहुत ही भावनापूर्ण यात्रा है और इसे मैं हमेशा अपने हृदय में संजोए रखूंगा।

महामहिम, भारत और अफगानिस्तान दो ऐसे राष्ट्र हैं जो न केवल भौगोलिक दृष्टि से बल्कि साझे इतिहास और अनेक साझी परम्पराओं तथा संस्कृतियों से भी जुड़े हुए हैं। अफगानिस्तान में पिछले तीन दशकों तक घटी कष्टदायक घटनाओं के दौर में भी हमारे लोगों ने इस संबंध को बनाए रखा। इस राष्ट्र ने अपनी तबाही का जो मंजर देखा है और उससे यहां के लोगों को जो दुख-तकलीफें उठानी पड़ी हैं, उसमें हम उनके साथ हैं।

इसीलिए सन् 2001 में बोन में हमने यह संकल्प लिया था कि हम आपके और अन्य सहभागियों के साथ मिलकर काम करके इस प्राचीन भूमि का फिर से निर्माण करेंगे तथा इसे एक ऐसा आधुनिक और अखण्ड राष्ट्र बनाने के इसके सपने को पूरा करने में मदद करेंगे जिसमें अमन-चैन और खुशहाली हो।

तब से हमारी आर्थिक भागीदारी एक बहु-आयामी कार्यक्रम के रूप में उभरकर सामने आई है। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, दूर-संचार, परिवहन, नागरिक उड्डयन, कृषि एवं सिंचाई, उद्योग, विद्युत उत्पादन एवं पारेषण तथा मानव संसाधन विकास शामिल हैं। मुझे इसमें कोई भी संदेह नहीं है कि आने वाले वर्षों में यह सहयोग और बढ़ेगा। इस भागीदारी के प्रति हमारा दृष्टिकोण क्षेत्रीय विकास के साथ-साथ हमारे सभी लोगों की प्रगति के साझे लक्ष्य को हासिल करने पर केन्द्रित होगा।

अफगानिस्तान ने पिछले साढ़े तीन सालों में अपने कुशल एवं योग्य नेतृत्व में जो प्रगति हासिल की है, उसकी हम सराहना करते हैं। एक नया संविधान अपना लिया गया है। अफगान लोगों ने राष्ट्रपति के चुनावों में अप्रत्याशित उत्साह से भाग लिया। इसमें महत्वपूर्ण बात यह रही कि इन चुनावों में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। अब अगले महीने संसदीय चुनावों के साथ ही लोकतांत्रिक प्रक्रिया और आगे बढ़ेगी। अफगानिस्तान विश्व में आतंकवाद के साझे खतरे से निपटने में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। यहां कुछ प्रान्तों में हाल ही में हिंसक घटनाओं में तेजी आई है जो चिन्ता का विषय है और इसमें हम आपके साथ हैं। हमें विश्वास है कि राजनीति इच्छाशक्ति और प्रतिबद्धता के साथ इस चुनौती का सामना किया जा सकेगा।

महत्वपूर्ण बात यह है कि अफगानिस्तान के लोगों ने यह दिखा दिया है कि वे लोकतंत्र का स्वागत करते हैं, अपनी समृद्धि चाहते हैं और इस क्षेत्र में स्थायित्व के पक्षधर हैं। लोकतांत्रिक समाजों के रूप में हम सहिष्णुता और बहुलवाद का इसलिए समर्थन करते हैं क्योंकि इनसे एक ऐसा वातावरण तैयार होता है जिसमें हमारे लोग अपनी सही क्षमता का इस्तेमाल कर सकते हैं।

आज अफगानिस्तान के सामने विकास की कई बड़ी चुनौतियां हैं और भौतिक तथा मानव संसाधनों के आधारभूत ढांचे का फिर से निर्माण करने की जरूरत है। भारत सरकार तथा भारत के लोगों की ओर से मैं अपनी इस प्रतिबद्धता को दोहराता हूँ कि हम मिलकर अफगानिस्तान को एक स्थाई और समृद्ध राष्ट्र बनाने और इसके लोगों द्वारा संजोए सपनों, जैसा कि हम भी चाहते हैं, को साकार करने के आपके प्रयासों में मदद करेंगे।

अन्त में, मैं आपके महान कवि बेदिल जिनका जीवन और कृत्य हमारे दोनों देशों के लोगों के बीच एक सेतु का काम करते हैं, की दो पंक्तियों को उद्धृत करना चाहूंगा।

उन्होंने लिखा था :

"सोभ-ए-केश्वर अफगान यास्मीन बहारास्तीन
बु-ए-नाज़ मि अयाद जल्वाह गाह-ए-यारास्तीन"

(खूबसूरत अफगानिस्तान की सुबह एक खिलते चमेली के फूल की तरह है जो एक मित्र के हृदय से आ रही प्यार की खुशबू बिखेर रहा है।)

धन्यवाद,

.....